सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्ड मण्डितकरा, या श्वेतपद्मासना
या ब्रह्माच्युत शंड्करप्रभृतिभिर्देवैः देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती, निः शेषजाड्यापहा।।

भावार्थ :- देवी सरस्वती के स्वरूप का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं, जो देवी स्वयं चन्द्र और बर्फ के समान सफेद वस्त्रों से सुशोभित हैं, जो सफेद कमल के पुष्प के आसन पर बैठी हैं और जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवताओं के द्वारा सदैव पूजित हैं, वही माँ सरस्वती देवी मेरी बुद्धि की जड़ता को दूर करें।